**परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय**

**कक्षा – 6**

**हिन्दी – वसंत भाग -1**

**पाठ्य सामग्री – 1**

**पाठ – 11 जो देखकर भी नहीं देखते**

**निबंध तथा लेखिका परिचय –** यह निबंध उन लोगों को केंद्र में रखकर लिखा गया है जो आत्मकेंद्रित तो होते हैं लेकिन अपने आस-पास के वातावरण और प्रकृति से पूर्णत: अछूते होते हैं। उनके चारों ओर कौन- कौन सी चीज़ें हैं और वे उन्हें किस प्रकार प्रभावित कर सकती हैं , इसका उन्हें आभास तक नहीं है। ऐसे लोगों के पास आँखें तो होती हैं , लेकिन वे उतना नहीं देखते , जितना वे देख सकते हैं।

निबंध की लेखिका हेलेन केलर हम सबके लिए प्रेरणा स्रोत हैं। 1880 में अमेरिका में जन्मीं हेलेन केलर न सुन सकती थीं न देख सकती थीं, फिर भी उन्होने लिखना , पढ़ना और बोलना सीखा। जब वे मात्र डेढ़ वर्ष की थीं तभी वे एक गंभीर बीमारी की शिकार हो गईं , जिसके कारण उनकी देखने और सुनने की शक्ति धीरे-धीरे समाप्त हो गयी। इसके बावजूद उन्होने हिम्मत नहीं हारी और जब वे कॉलेज में थीं तभी उनकी आत्मकथा ‘स्टोरी ऑफ लाइफ’ प्रकाशित हुयी। उनकी इस पुस्तक का अनुवाद विश्व की लगभग सभी भाषाओं में हुआ है। इसके अतिरिक्त उनकी दस पुस्तकें और सैकड़ों लेख भी प्रकाशित हुये हैं । उन्होने अपने जैसे विशिष्ट क्षमता वाले लोगों के अधिकारों और विश्वशांति के लिए दुनिया भर में भ्रमण किया और हमारे सामने मिसाल के रूप में उपस्थित हुईं।

**निबंध का सारांश-** निबंध में लेखिका अपने अनुभवों के बारे में बताते हुये कहती हैं कि वे प्राय: अपने मित्रों की परीक्षा लेती हैं, यह जानने के लिए कि वे अपनी आँखों से क्या-क्या देखते हैं। एक बार उनकी एक प्रिय मित्र जंगल की सैर करके लौटीं तो हेलेन ने उनसे पूछा कि आपने क्या-क्या देखा ? तब उनकी मित्र ने जवाब दिया कि “ कुछ खास तो नहीं “ । हेलेन को अपनी मित्र का जवाब सुनकर आश्चर्य नहीं हुआ , क्योंकि जब भी वे किसी से ऐसे प्रश्न करती हैं तो उन्हें प्राय: इसी प्रकार के उत्तर मिलते हैं । इसलिए अब उन्हें इस प्रकार के उत्तर सुनने की आदत हो चुकी है। हेलेन केलर को अब यह विश्वास हो गया है कि जिनके पास आँखें हैं, वे बहुत कम देखते हैं।

वे आश्चर्य प्रकट करती हैं कि , कोई व्यक्ति जंगल जैसी जगह पर इतनी देर घूमे और उसे कोई विशेष चीज़ दिखाई न दे। वे अपने बारे में बताती हैं कि वे कुछ भी नहीं देख सकतीं फिर भी उन्हें ऐसी अनेक चीज़ें मिलती हैं , जिन्हें वे छूकर पहचान लेती हैं और ये सब कुछ उन्हें बहुत प्रभावित भी करता है। जैसे- भोज-पत्र के पेड़ की चिकनी छाल , चीड़ की खुरदरी छाल , वसंत के मौसम में खिली नयी कलियाँ , फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह और घुमावदार बनावट , चिड़िया के मधुर स्वर , झरने का पानी तथा घास के मैदान आदि ।

हेलेन अपनी भावनाएँ व्यक्त करती हुयी कहती हैं कि उन्हें वे वस्तुएँ देखने की बहुत इच्छा होती है , जिन्हें मात्र छूने से ही वे रोमांचित हो उठती हैं। निबंध के अंत में वे हमारे जैसे साधारण मनुष्यों की संवेदनहीनता पर दु:ख प्रकट करते हुये कहती हैं कि जिन लोगों के पास आँखें हैं , वे सचमुच बहुत कम देखते हैं। इस संसार में अनेक ऐसी खूबसूरत वस्तुएँ और अनेक रंग हैं , जो बहुमूल्य हैं, लेकिन उनकी तरफ हमारा ध्यान तक नहीं जाता। जो चीज़ें हमें सरलता से प्राप्त होती हैं , हम उनकी कीमत नहीं समझते हैं और हमेशा उन चीजों को प्राप्त करना चाहते हैं , जो हमसे दूर हैं। हम प्रकृति द्वारा मिले इस दृष्टि के आशीर्वाद को एक साधारण चीज़ समझते हैं , जबकि प्रकृति का यह उपहार हमारे जीवन को रंगीन और खूबसूरत बनाता है।

**पाठ में आए कठिन शब्द और उनके अर्थ-**

**शब्द**  **- अर्थ**

अचरज आश्चर्य

आदी होना आदत हो जाना

स्पर्श छूना

संवेदना किसी भी भाव को महसूस करने की क्षमता

दृष्टि नज़र

नियामत प्रकृति प्रदत्त उपहार